Shodh Sari-An International Multidisciplinary Journal

@2024 International Council for Education Research and Training
2024, Vol. 03, Issue 04, 326-330
ISSN: 2959-1376
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7766

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और उच्च शिक्षा

चौहान, तपस्या

असिस्टेंट प्रोफेसर, डॉ. भीमराव आंबेडकर, विश्वविद्यालय, आगरा

सार

जन्म के पश्चात् से ही बालक के सीखने की प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है। वह औपचारिक व अनौपचारिक दोनों प्रकार से शिक्षा ग्रहण कर अपने जीवन के निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु निरन्तर परिश्रम करता है। निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु औपचारिक शिक्षा महत्वपूर्ण मार्गदर्शक की भूमिका का निर्वहन करती है। शिक्षा द्वारा ही छात्र के व्यक्तित्त्व का विकास तथा उसकी प्रतिभा में निखार आता है। वह विद्यालय में प्रवेश लेकर बाल्यकाल से ही विविध विषयों का ज्ञान अर्जन करता है। यह विषय उसके बौद्धिक विकास के साथ उसकी क्षमताओं में वृद्धि करते हैं। छात्र के भीतर नैतिक मूल्यों को पुष्ट करते हुए जीवन मूल्यों तथा सामाजिक मूल्यों को पोषित करने का प्रयत्न करते हैं। इन्हीं लक्ष्यों को ध्यान में रखकर पाठ्यक्रम व शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग शिक्षक छात्र के बहुमुखी विकास के लिए करता है। आज के छात्र ही देश का भविष्य निर्धारित करेंगे इसी सोच के साथ शिक्षण व शिक्षक के ऊपर उत्तरदायित्व बढ़ जाते हैं और राष्ट्र निर्माताओं (छात्र) हेतु शिक्षण प्रणाली/शिक्षण पद्धति/शिक्षण नीति में समयायनुसार परिवर्तन किये जाते हैं। वैदिक शिक्षा, गुरुकुल शिक्षण पद्धति व राष्ट्रीय शिक्षा नीति तक का उद्देश्य छात्रों को एक जिम्मेदार नागरिक बनाने का प्रयास रहा है। प्राचीन काल से ही भारतवर्ष अनेक अमूल्य विद्याओं की निधि रहा है। उच्चस्तरीय व गुणवत्तापूर्ण शिक्षण विश्वविख्यात हैं। भारतीय ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व से छात्र विद्यार्जन हेतु भारतभूमि पर आये, इसलिए भारत विश्वगुरु कहलाया। भारत का विश्व गुरु बनने के पीछे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कारक यहाँ की विभिन्न गौरममयी विद्याएं, शिक्षण शैली एवं विश्वविद्यालय रहे, जहां भारतीय ही नहीं अपितु अन्य देशों से भी छात्र ज्ञानार्जन हेतु आते थे। राष्ट्र का प्राचीन गौरव लिए नई शिक्षा नीति में भी उच्च शिक्षा को गुणवत्ता व रोजगारपरक बनाने हेतु विश्वविद्यालयी स्तर पर अनेक कार्य किये गये हैं जिससे छात्र राष्ट्र उत्थान में महत्त्वपूर्ण सहयोग करें। प्रस्तुत शोध में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अवलोकन उच्च शिक्षा के संदर्भ में किया जाएगा।

@2024 International Council for Education Research and Training 2024, Vol. 03, Issue 04, 326-330
ISSN: 2959-1376 DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7766

बीज शब्द- शिक्षण, प्रणाली, पद्धति, नीति, पाठ्यक्रम, अभिरुचि, अधिगम, सहायक-सामग्री, दूरस्थ-शिक्षा, तकनीकि, डिजिटल, प्रौद्योगिकी, मानविकी शिक्षा, औपचारिक आदि।

प्रस्तावना- प्राथमिक शिक्षा द्वारा बालक के भाषा कौशल और उसके बौद्धिक विकास में वृद्धि हेतु अनेक प्रकार से शिक्षण-सामग्री का प्रयोग करते हुए उसे माध्यमिक शिक्षा हेतु तैयार करने का प्रयत्न किया जाता है। माध्यमिक शिक्षा में बालक को प्रतिभाशाली बनाने के साथ ही भाषा व अनेक विषयों से परिचय भी करवाया जाता है ताकि वह विज्ञान, प्रौद्योगिकी, तकनीकि, समाज, साहित्य, कला इत्यादि आवश्यक विषयों के बारे में आवश्यक जानकारी प्राप्त कर उनके विषय में जिज्ञासा उत्पन्न हो। जिज्ञासा के साथ-साथ इनके प्रति रुचि को विकसित करने हेतु अनेक प्रतियोगिताएं व कार्यक्रम भी आयोजित किये जाते हैं। जिससे छात्र उनमें स्वेच्छा से रुचि लेता है और प्रतिभागी के रूप में बहुत कुछ सीखता है। शिक्षक की इस प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका मार्गदर्शक के रूप में रहती है किंतु इन प्रतियोगिता व कार्यक्रमों का मुख्य केन्द्र छात्र अभिरुचि ही रहती है। बारहवीं की परीक्षा पास करने के पश्चात् बालक उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु विश्वविद्यालय, महाविद्यालयों में प्रवेश हेतु जाता है। उच्च स्तरीय शिक्षा द्वारा छात्र अपने भविष्य को नया आकार देना चाहता है। उच्च शिक्षा प्राप्ति का उद्देश्य मात्र रोजगार प्राप्ति न होकर राष्ट्र के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास के साथ-साथ नैतिक मूल्यों का निज जीवन में समावेश करना है। यह समझ वह विद्यालयों के साथ-साथ उच्च स्तरीय शिक्षा द्वारा भी प्राप्त करता है। उच्च शिक्षा द्वारा वह विषय विशेष में विशेषज्ञता प्राप्त कर उस क्षेत्र में समाज व राष्ट्रहित हेतु कार्य करता है। वर्तमान समय में वह उद्देश्य विहीन होकर शिक्षा का उपयोग न कर स्वार्थ सिद्धि हेतु शिक्षा का दुरुपयोग कर नैतिक मूल्यों को भूलता जा रहा है। नैतिक हनन का कारण पाश्चात्य पद्धति पर आधारित हमारी शिक्षा प्रणाली रही। स्वतंत्रता के पश्चात् राष्ट्रीयकरण हुआ तथा भारतीय चिंतकों द्वारा शिक्षण प्रणाली की ओर मनन किया परिणामस्वरूप चली आ रही शिक्षण प्रणाली में परिस्थिति व परिवेश के अनुरूप यथा संभव परिवर्तन किये गये जिससे छात्रों के साथ-साथ भारतीय संस्कृति, सभ्यता व शैली के प्रति अनुराग उत्पन्न हो।

अध्ययन का उद्देश्य: प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य उच्च शिक्षा के संदर्भ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अध्ययन तथा विश्लेषण करते हुए सभी शिक्षा नीति के उद्देश्यों को उच्च शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में रेखांकित

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 04, 326-330
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7766

करना है। नई शिक्षा नीति द्वारा किये गये परिवर्तनों द्वारा भविष्योन्मुखी परिणामों को बिंदुवार उल्लेखित करते हुए निष्कर्ष तक पहुँचना है जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को उच्च शिक्षा के संदर्भ में समझने में सहायक सिद्ध हो।

मुख्य पत्र- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत सरकार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण और बड़ा कदम है। नई शिक्षा नीति में छात्र केन्द्रित शिक्षा प्रणाली है जिससे छात्र का बहुमुखी विकास तथा उसकी प्रतिभा का विस्तार भी हो सके। नई शिक्षा पद्धति को लचीली व विषय सीमाओं से मुक्त रखने का प्रयास किया गया है। जिससे छात्र की विशिष्ट क्षमताओं का विकास हो और वह प्रभावपूर्ण तरीके से रुचि के अनुसार उच्च शिक्षा प्राप्त कर विषय सम्बन्धी क्षेत्र में अपना कौशल दिखा सके। "वर्तमान में उच्च शिक्षा के संचालन के लिए यू.जी.सी., ए.आई.सी.टी.ई. जैसी 17 नियामक संस्थाएँ हैं। इतनी नियामक संस्थाओं का होना कई बार सुगमता के स्थान पर बाधक बन जाता है। इसे ही ध्यान में रखते हुए शिक्षा नीति 2020 'हायर एजुकेशन कमीशन ऑफ इंडिया' की स्थापना का सुझाव देती है। यह संस्था उच्च शिक्षा की वर्तमान नियामक संस्थाओं के बीच नियमन, वित्त पोषण, आंकलन आदि के द्वंद्व और विरोधाभास को समाप्त करेगी। इस समिति के चार क्षैतिज उपविभाग होंगे, जिनके अपने स्वतंत्र दायित्व होंगे और वे इन्हीं के अनुरूप कार्य करेंगे। नेशनल हायर एजुकेशन रेगुलेटरी काउंसिल, विधि शिक्षा और मेडिकल शिक्षा को छोड़कर अन्य उच्च शिक्षा के कार्यक्रमों की नियामक संस्था के रूप में कार्य करेगी। यह कठोर परन्तु लोचशील तरीके से स्व प्रकटीकरण व्यवस्था के अंतर्गत शिक्षा संस्थानों की अधोसंरचना, संकाय सदस्यों की नियुक्ति, अध्ययन कार्यक्रमों, अध्ययन निष्पत्तियों, वित्तीय घोषणाओं आदि की निगरानी करेगी।'1 इसी प्रकार वित्त तथा अनुदान सम्बन्धी कार्य हायर एजुकेशन ग्रांट काउंसिल द्वारा किये जायेंगे।

नई शिक्षा नीति विश्वविद्यालयों के तीन प्रकार क्रमशः शोध प्रधान, शिक्षण प्रधान तथा स्वायत्त उपाधि प्रदाता महाविद्यालयों की पुर्नसंरचना के पक्ष में है। यह ऑनलाइन शिक्षा व दूरस्थ शिक्षण को भी महत्त्वपूर्ण स्थान देती है। "वर्तमान में 37.4 मिलियन विद्यार्थी उच्च शिक्षा के अंतर्गत अध्ययनरत हैं। भारत का सकल नामांकन दर सकल नामांकन अनुपात 26.3 है। यह विश्व के विकसित देशों की तुलना में कम है। नई शिक्षा नीति 202 में यह लक्ष्य रखा गया है कि 2030 तक इसे बढ़ाकर 50 प्रतिशत किया जाएगा।''2 किंतु इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु एक समस्या यह भी है कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 04, 326-330
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7766

योग्य छात्र वर्ग की संख्या बहुत कम है। इस समस्या के समाधान हेतु बहुविषयक प्रणाली को लागू किया गया है। यह प्रणाली विद्यार्थी को उसकी रुचि के अनुरूप विषय-चयन की स्वतंत्रता प्रदान करती है। इस तरह छात्र विषय बंधन व कृत्रिम ज्ञानार्जन से मुक्त शिक्षा ग्रहण करते हैं। बंधन मुक्त रुचि संगत उच्च शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण व समावेशी बनाने का मूल उद्देश्य छात्रों में चिंतनशीलता, प्रबुद्धता, नैतिकता, चरित्रवान, संवैधानिक मूल्यों के प्रति जागरूक, प्रश्नाकूल तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करना है। "उपायों की एक श्रृंखला के माध्यम से पहुंच, समता और समावेशन में वृद्धि इसके साथ ही उत्कृष्ट सार्वजनिक शिक्षा के लिए अधिक अवसर वंचित और निर्धन छात्रों के लिए निजी/परोपकारी विश्वविद्यालयों द्वारा छात्रवृत्ति में पर्याप्त वृद्धि ओपन स्कूलिंग ऑनलाइन शिक्षा और मुक्त दूरस्थ शिक्षा (ओडिएल) और दिव्यांग शिक्षार्थियों के लिए सभी बुनियादी ढांचे और शिक्षण सामग्री की उपलब्धता और उस तक उनकी पहुंच''3 को प्राथमिकता दी गई है।

तकनीकि के विषय में चर्चा की जाए तो भारत में तकनीकि शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों का रुझान बहुत अधिक है। सत्यता भी यही है कि तकनीकि के प्रयोग द्वारा ऑनलाइन कक्षाएँ व दूरस्थ शिक्षा सभी को समान रूप से उपलब्ध कराई जा सकती है। चिकित्सा हो या कला सभी क्षेत्रों में तकनीकि का प्रयोग अनिवार्य होता जा रहा है। "वर्तमान समय में विश्वविद्यालयी शिक्षा में व्यवसायी शिक्षा सम्बन्धी कुछ कोर्स भी जोड़ दिये गये हैं- यथा प्रिट मेकिंग, फोटोग्राफी, बुककलर, डिजाइनिंग, बाटिक, टाई एण्ड डाई, स्क्रीन प्रिटिंग आदि। जिससे अधुनातन विकसित तकनीकि ज्ञान प्राप्त कर वह व्यवसायिक क्षेत्र में भी कदम रख सके। विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा प्रदान की जाये जिससे वे सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक दोनों पक्षों में सुदृढ़ हो सकें।''4 साथ ही तकनीकि का प्रयोग शिक्षण सुगम बनाने हेतु भी किया जा रहा है। उदाहरण के लिए चिकित्सा के क्षेत्र में कम्प्यूटर की मदद से अनेक गंभीर रोगों का इलाज विश्वसनीयता व पारदर्शितापूर्वक किया जा रहा है।

निष्कर्ष

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उच्च शिक्षा को सभी वर्ग, जाति, क्षेत्र के छात्रों के लिए उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है। साथ ही छात्र के व्यक्तित्व निर्माण हेतु कला मानविकी, विज्ञान, तकनीकि जैसे विषयों की सीमाएं समाप्त कर छात्रों को विषय चयन की स्वतंत्रता प्रदान की गई है जिससे वह अपनी रुचि व प्रतिभा के अनुरूप ज्ञानार्जन कर राष्ट्र उन्नति में सहयोगी बने। प्रत्येक क्षेत्र के विषयों को रोजगार

@2024 International Council for Education Research and Training
ISSN: 2959-1376
2024, Vol. 03, Issue 04, 326-330
DOI: https://doi.org/10.59231/SARI7766
Received on July 10, 2024
Accepted on Aug 30, 2024
Published on Oct 01, 2024

परक बनाने हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लचीला व छात्र केन्द्रित बनाया गया है ताकि वह रुचि के अनुरूप पूर्ण मनोयोग से शिक्षित होकर एक श्रेष्ठ नागरिक बनकर अपने परिवार, समाज व देश को उन्नति की ओर ले जाए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और उच्च शिक्षा © 2024 by डॉ. तपस्या चौहान is licensed under CC BY-NC-ND 4.0

संदर्भ सूची

1. अतुल कोठारी: राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, भारतीयता का पुनरुत्थान: प्रभात प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली: संस्करण-2022, पृ. 53-54
2. अतुल कोठारी: राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, भारतीयता का पुनरुत्थान: प्रभात प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली: संस्करण-2022, पृ. 56
3. प्रसाद राव जामि, प्रहलाद सिंह अहलूवालिया: शोध प्रकाशन, हिसार (हरियाणा): संस्करण-2023, पृ. 274
4. डॉ. ममता सिंह एवं डॉ. चेतना पोखरियाल: भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (एक क्रांतिकारी पहल): सत्यम् पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली: संस्करण-2021, पृ. 93